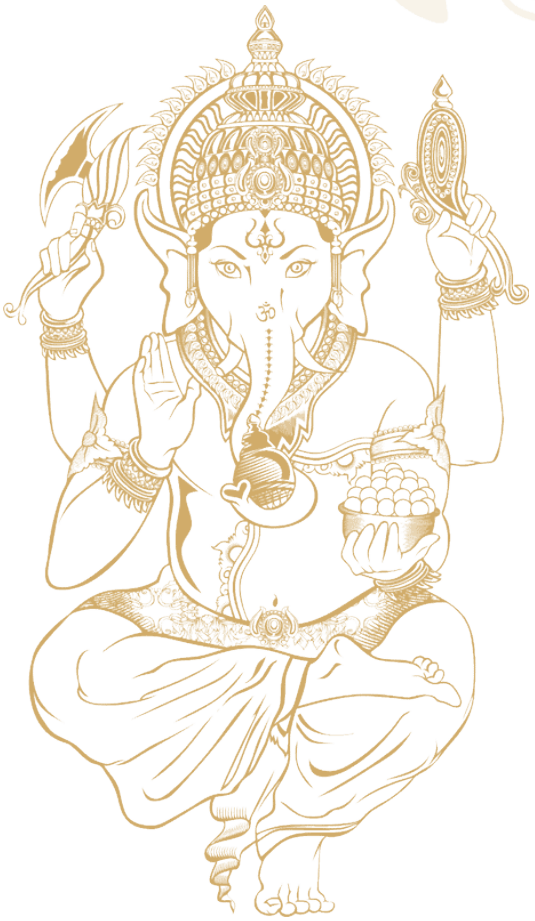

27 Jan 2026

08:46 AM

Jammu

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121072001

तिथि 27/01/2026 **समय** 08:46:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Jammu **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:23
अक्षांश 32:42:00 उत्तर **रेखांश** 74:52:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:30:32 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	: 16:41:09 घं	गण	: मनुष्य
वेलान्तर	: 00:12:42 घं	योनि	: गज
सूर्योदय	: 07:28:42 घं	नाड़ी	: मध्य
सूर्यास्त	: 17:58:13 घं	वर्ण	: क्षत्रिय
चैत्रादि संवत	: 2082	वश्य	: चतुष्पाद
शक संवत	: 1947	वर्ग	: मृग
मास	: माघ	युँजा	: पूर्व
पक्ष	: शुक्ल	हंसक	: अग्नि
तिथि	: 9	जन्म नामाक्षर	: लो-लोकेश
नक्षत्र	: भरणी	पाया(रा.-न.)	: ताम्र-स्वर्ण
योग	: शुक्ल	होरा	: सूर्य
करण	: कौलव	चौघड़िया	: रोग

विंशोत्तरी		योगिनी	
शुक्र 2वर्ष 1मा 13दि		भद्रिका 0वर्ष 6मा 10दि	
शुक्र		भद्रिका	
27/01/2026		27/01/2026	
11/03/2028		08/08/2026	
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	27/01/2026		00/00/0000
बुध	10/01/2027		27/01/2026
केतु	11/03/2028	भ्रामरी	08/08/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			06:46:30	कुंभ	शतभिषा	1	राहु	राहु	---	0:00			
सूर्य			12:57:45	मक	श्रवण	1	चंद्र	राहु	शत्रु राशि	1.24	पुत्र	पितृ	विपत
चंद्र			25:15:13	मेष	भरणी	4	शुक्र	बुध	सम राशि	1.12	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल		अ	08:42:08	मक	उत्तराषाढ़ा	4	सूर्य	शुक्र	उच्च राशि	1.18	ज्ञाति	भ्रातृ	सम्पत
बुध		अ	16:44:09	मक	श्रवण	3	चंद्र	शनि	सम राशि	1.08	मातृ	ज्ञाति	विपत
गुरु	व		23:42:08	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.29	अमात्य	धन	साधक
शुक्र		अ	17:50:57	मक	श्रवण	3	चंद्र	बुध	मित्र राशि	0.92	भ्रातृ	कलत्र	विपत
शनि			03:57:03	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	सम राशि	0.93	कलत्र	आयु	वध
राहु	व		15:11:15	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	प्रत्यारि
केतु	व		15:11:15	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	जन्म

लग्न-चलित

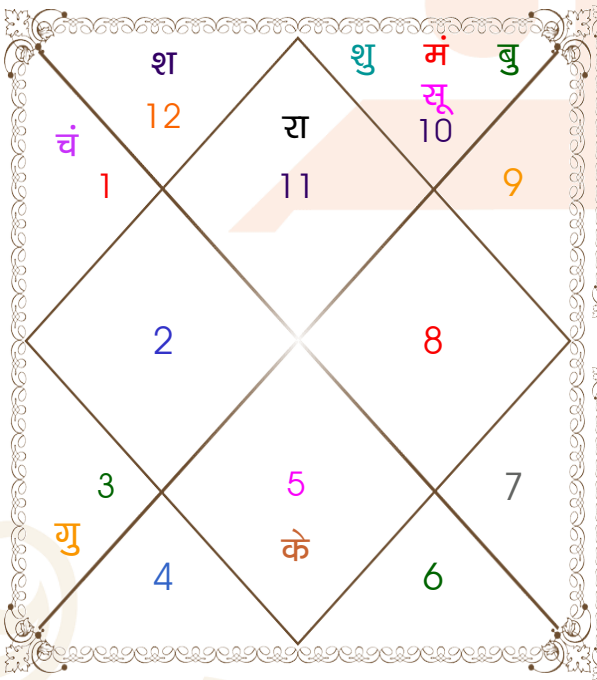

चन्द्र कुंडली

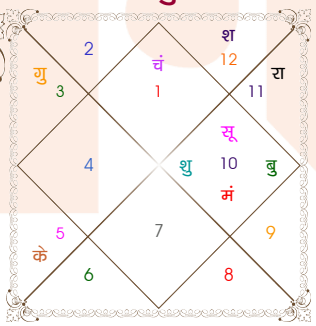

नवमांश कुंडली

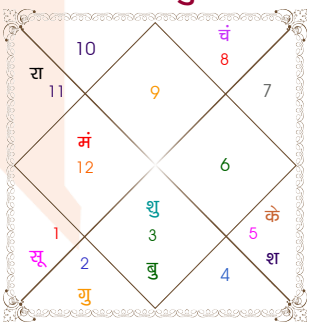

सर्वाष्टकवर्ग

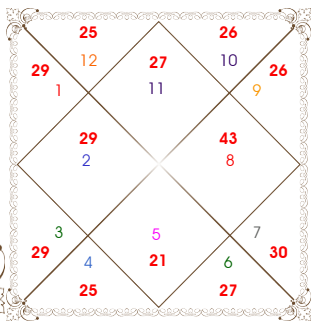

दशमांश कुंडली

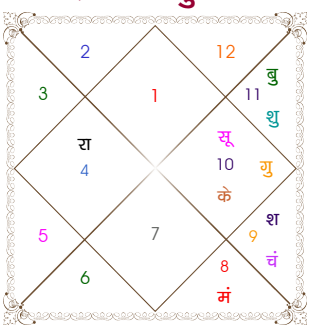

शर्मा डा.जगदीश
नव्यव्याकरणाचार्य एम.ए एम.फिल् पी- एच.डी. यू.जी.सी. स्कॉलर
7018169448
jagdish0069@gmail.com

नक्षत्रफल

भरणीं नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने से आपकी जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल हैं। आपका मनुष्य गण, गजयोनि, मध्यनाडी, क्षत्रिय वर्ण तथा मृग वर्ग है। भरणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने के कारण आपके जन्म नाम का आद्याक्षर "लो" होगा।

नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने के कारण आप मनोरंजन के साधनों गीत, संगीत, नृत्य तथा सिनेमा में तथा खेलकूदों के प्रति अपनी विशेष अभिरूचि प्रदर्शन करेंगे तथा अपने समय का अधिकांश भाग इन्हीं पर व्यतीत करेंगे। स्वभाव से ही आप पानी से भय महसूस करेंगे। यदा कदा स्नानादि की भी आप इसी सन्दर्भ में उपेक्षा करेंगे। चंचलता का समावेश आपकी प्रकृति में रहेगा तथा अन्य लोगों से आपका व्यवहार सामान्य ही रहेगा।

सदापकीर्ति र्हि महापवादैर्नाना विनोदैश्च विनीतकालः।
जलातिभीरूश्चपलः खलश्च प्राणी प्रणीतोभरणीजातः।।
जातकाभरणम्

अर्थात भरणी में उत्पन्न जातक लोकोपवाद से अपयश पाने वाला, अपने समय को नाना प्रकार के खेल या विनोद द्वारा व्यतीत करता है। यह जल से भीरू, चंचल प्रवृति तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आप अपने संकल्प के पक्के होंगे। एक बार जिस संकल्प को ले लेंगे जी जान लगाकर उसे पूर्ण करेंगे। सत्य बोलना तथा सत्य का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके शरीर की स्वस्थता बनी रहेगी तथा रोग कम ही होंगे। चतुराई से किसी भी कार्य को सम्पन्न करना आपका स्वाभाविक गुण होगा। जो भी कार्य आपके द्वारा किया जाएगा आपकी दक्षता की झलक उसमें स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होगी। आप का जीवन सामान्य रूप से सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

कृत निश्चयः सत्यारूग्दक्षः सुखितश्च भरणीषु।
बृहज्जातकम्

अर्थात् भरणी नक्षत्र में जन्मा जातक सत्यवक्ता, बात का पक्का, रोगरहित और कार्यकलाप में चतुर होता है।

कभी कभी आप किसी भी बात की विशेष हठ करेंगे और उसे पूरा ही करके छोडेंगे चाहे उससे अन्य लोगों को कोई परेशानी हो रही हो। आपके पास सम्पत्ति पर्याप्त मात्रा में रहेगी तथा धनार्जन भी पूर्ण मात्रा में होगा एवं बीमारियों से दूर ही रहेंगे। आपकी मुखाकृति निश्चित रूप से सुन्दर एवं दर्शनीय होगी।

अरोगी सत्यवादी च सम्पद्युक्तो दृढब्रतः।
भरण्यां जायते लोकः सुमुखश्च सुनिश्चितम्।।

शर्मा डा.जगदीश
नव्यव्याकरणाचार्य एम.ए एम.फिल् पी- एच.डी. यू.जी.सी. स्कॉलर
7018169448
jagdish0069@gmail.com

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य रोग रहित, सत्यवादी, सम्पत्तिशाली और हठव्रती होता है। उसका मुख सुन्दर होता है। यह सुनिश्चयी होते है।

यदा कदा आप शारीरिक तथा मानसिक व्याकुलता से कष्ट महसूस करेंगे। कभी कभी जन सामान्य आपके चरित्र पर सन्देह भी करेंगे। आप मन से कभी कभी कठोरता का प्रर्दशन भी करंगे। क्रूर भी होंगे। आप कभी किसी के द्वारा अपने ऊपर किए गये उपकार को परन्तु धन से आप आजीवन युक्त रहेंगे।

याम्यर्क्षे विकलोऽन्यदारनिरतः क्रूरः कृतध्नो धनी।
जातकपरिजातः

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप से व्याकुल, दूसरे की स्त्री में अनुरक्त, क्रूर तथा कृतध्न एवं धनी होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ है। अतः जीवन में आप धन वैभव से प्रायः सुसम्पन्न ही रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। काव्यशास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप परिश्रमपूर्वक ख्याति भी अर्जित करेंगे। भाइयों के प्रति आपके मन में पूर्ण स्नेह रहेगा तथा उनको आप हमेशा अपने ओर से प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहेंगे। सुन्दर वस्त्रों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा तथा इनको पहनने एवं संग्रह करने में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा आप एक बलशाली पुरूष होंगे। साथ ही आप पराक्रम से भी युक्त रहेंगे एवं शौर्योचित कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत तथा तत्पर रहेंगे। आप सामान्यतया प्रसन्नचित रहेंगे। परन्तु आपका स्वभाव कृपण होगा। इसके अतिरिक्त आप एक विद्वान एवं सौभाग्यशाली पुरूष भी रहेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

आपका जन्म मेष राशि में हुआ है। अतः आप थोड़ी मात्रा में भोजन करने वाले होंगे साथ ही आप अपने भाईयों में श्रेष्ठ होंगे।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।
जातकपरिजातः

आपके शरीर का वर्ण ताम्र के वर्ण के समान होगा तथा आखें रक्तिम आभा लिए गोल होगी। आपके सिर पर घाव या चोट का निशान भी हो सकता है।

साथ ही सिर पर अल्प केश होगे। आप के हाथ पैर कमल की कान्ति के समान होंगे। जल से आप स्वाभाविक रूप से भयभीत रहेंगे। साहस तथा संघर्ष की शक्ति का आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा अपने साहस के बल पर कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। धन को आप मान सम्मान से भी अधिक प्रतिष्ठा प्रदान करेंगे जिससे कभी कभी समस्याएं उत्पन्न होंगी। सहयोगी तथा मित्रों की आपके पास बहुलता रहेगी। आपके पुत्र भी कन्याओं की अपेक्षा अधिक

शर्मा डा.जगदीश
नव्यव्याकरणाचार्य एम.ए एम.फिल् पी- एच.डी. यू.जी.सी. स्कॉलर
7018169448
jagdish0069@gmail.com

होंगे।

स्त्री जन सामान्य से आपका स्नेहशील व्यवहार रहेग। तथा अपने सद्व्यवहार के कारण आप समाज में पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।
कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चत्रचलो मानवित्तः।।
पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।
सस्नेहतोयभीरू र्व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।
सारावली

आप स्वभाव से ही शीघ्र क्रोधित तथा शीघ्र प्रसन्न होने वाले होंगे। आप सुदूर क्षेत्रों के भ्रमण करने के इच्छुक होंगे। आप के हाथ में शौर्यसूचक चिन्ह यथा पताका चक्र आदि हो सकते हैं। स्त्री वर्ग में आप लोकप्रिय रहेंगे। लेकिन सबके साथ सहयोग करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा लोगों को अपने परेशानी के समय में भी सहयोग प्रदान करेंगे।

वृताताम्रदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।
कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।
कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।
शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरुः क्रिये।।
बृहज्जातकम्

धन को आवश्यकता से अधिक महत्व प्रदान करना आपके श्रेष्ठ संबंधियों की नाराजगी का कारण बनेगा अतः वे आपसे अलग होंगे या आप उनसे अलग हो जाएंगे। साथ ही आप घर के सारे कार्य अपनी स्त्री के कहे अनुसार ही सम्पन्न करेंगे। अतः इससे भी वैमनस्य अधिक बढ़ेगा। आप आजीवन धन का उपभोग करेंगे तथा अपने वैभव से समाज में अच्छी कीर्ति भी प्राप्त करेंगे।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।
जातकाभरणम्

भ्रमण के लिए आप अगम्य स्थानों पर जाने की इच्छा करते हैं जहाँ आसानी से नहीं पहुचां जा सकता हो। आपके सामाजिक संबंध अत्यन्त विस्तृत होंगे अतः समय समय पर आप अभक्ष्य पदार्थो अर्थात् मांस, मदिरा आदि का भी भक्षण कर सकते हैं।

मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आपके स्वभाव में कभी कभी उग्रता का समावेश हो जाता हैं। यह उग्रता जब क्रोध के रूप में उत्पन्न होगी तो उससे अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। प्रवृति में चंचलता के कारण आप कभी कभी मिथ्याभाषण भी करेंगे।

शर्मा डा.जगदीश
नव्यव्याकरणाचार्य एम.ए एम.फिल् पी- एच.डी. यू.जी.सी. स्कॉलर
7018169448
jagdish0069@gmail.com

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरूर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।
संचारशीलश्चपलोडनृतोक्ति व्रणाङ्कताङ्गः क्रियभे प्रजातः।।
फलदीपिका

यौगिक क्रियाएं आपको रूचिकर लगेंगी तथा सिर पर केशों की मात्रा अल्प होगी। पित्त या गरमी प्रदान करने वाले पदार्थों का आप यथा शक्ति कम प्रयोग करें अन्यथा मस्तिष्क में विकार का योग बनता है। दुर्घटनाओं से बचें तथा शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।
संभवति पुरूषोळयं मेष राशौ।।
जातक दीपिका

आप मनुष्य गण में उत्पन्न हुए हैं। अतः जन्म से ही आप धार्मिक प्रवृति के होंगे। देवता तथा ब्राहमणों में आपकी असीम श्रद्धा होगी। आप धनवान तो होंगे साथ ही अभिमानी भी होंगे। आप बलवान तथा दयावान भी होंगे। आप दीन दुःखियों की मदद करेंगे तथा प्रयत्नपूर्वक उनको सहयोग प्रदान करेंगे। आप विभिन्न प्रकार के कार्यों एवं कलाओं के ज्ञाता होंगे। ज्ञान प्राप्त करने में भी आपकी रूचि रहेगी। आपका शरीर कान्तियुक्त एवं सुन्दर होगा तथा आप बहुत से लोगों के सुखप्रदानकर्ता या आश्रयदाता होंगे।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।
चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

मान सम्मान से आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगे। आप आजीवन विपुल धन के स्वामी रहेंगे। आँखें आपकी बडी बडी होंगी तथा निशाने बाजी में दक्ष होंगे। नगरवासियों को आप वश में करने पर सफल रहेंगे। आप किसी नगर के प्रतिष्ठित व्यक्ति भी हो सकते हैं।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गज योनि में पैदा होने के कारण आप राजा के द्वारा पूर्ण सम्मानीय होंगे अर्थात् मंत्रियों तथा उच्चाधिकारियों से आपके घनिष्ठ संबंध होंगे। आप आत्म, बाहु तथा बुद्धि बल

से युक्त रहेंगे तथा इन्हीं से अपने सारे कार्य सम्पन्न करेंगे। समस्त सांसारिक तथा भौतिक सुखों का आप उपभोग करेंगे। आप किसी मंत्री या उच्चाधिकारी के सहयोगी या खुद उच्चाधिकारी हो सकते हैं। आप बाल्यकाल से ही उत्साही रहेंगे तथा इसी उत्साही प्रवृति से कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।
आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम

रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

कार्तिक मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष दोनो की, मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग, रविवार प्रथम प्रहर तथा मेष राशिस्थ चन्द्रमा यह समय आपके लिए अनिष्टकारी हैं अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य, मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग तथा ववकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, लेनदेन साझेदारी आदि कार्य सम्पन्न न करें। इन दिनों लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। साथ ही रविवार प्रथम प्रहर तथा मेषराशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखे। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

यदि आपको समय अनुकूल न लग रहा हो शारीरिक तथा मानसिक व्याकुलता बढ रही हो, व्यापार में हानि हो रही हो अथवा नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान हो रहा हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट श्री हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए तथा सोना, तांबा, गैंहू, गुङ, लालवस्त्र इत्यादि पदार्थों का दान करना चाहिए। साथ ही मंगल के तांत्रीय मंत्र के 7 हजार जप करवाने चाहिए। इससे अशुभ फलों में न्यूनता आएगी। मंगलवार के उपवास करने से भी आप मानसिक शान्ति प्राप्त करेंगे।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ श्रीं भौमाय नमः।

शर्मा डा.जगदीश
नव्यव्याकरणाचार्य एम.ए एम.फिल् पी- एच.डी. यू.जी.सी. स्कॉलर
7018169448
jagdish0069@gmail.com